Date: 6/7/19

पाठ-2

वर्ण विचार

1. **वर्ण** :- वर्ण भाषा की वह छोटी इकाई है, जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

2. **वर्ण को अक्षर भी कहते हैं।**

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं - स्वर एवं व्यंजन

3. **स्वर** :- जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है अर्थात इनके उच्चारण में अन्य ध्वनियों की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, वे स्वर वर्ण कहलाते हैं।

अ, आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों के तीन भेद होते हैं।

स्वर

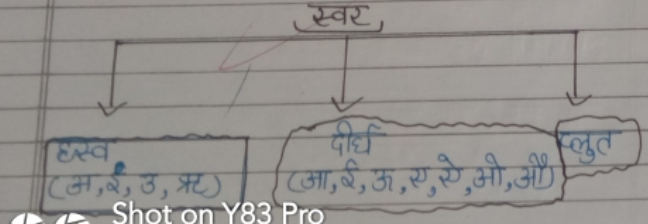

- ह्रस्व (अ, इ, उ, ऋ)
- दीर्घ (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)
- प्लुत

1. **ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों का उच्चारण करते समय बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। वे हैं - अ, इ, उ, ऋ

2. **दीर्घ स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। वे हैं - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

3. **प्लुत स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से लगभग तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इसका चिह्न है (ऽ) जैसे: ओऽम्

- **स्वरों की मात्राएँ** - कई बार स्वर स्वतंत्र रूप से लिखे जाते हैं, जैसे: अनार, आम, ईख आदि। कई बार स्वर व्यंजनों के साथ जोड़कर लिखे जाते हैं तब ये मात्रा का रूप ले लेते हैं। जैसे:

अ - कोई मात्रा नहीं	उ - ु
आ - ा	ऊ - ू
इ - ि	ऋ - ृ
ई - ी	ए - े
ऐ - ै	ओ - ो
	औ - ौ

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

Kumar
Date: / /
Page:

- **व्यंजन :-** जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। इनके उच्चारण करते समय हवा रुकावट के साथ मुख से बाहर आती है।

व्यंजन को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है-

व्यंजन
↓ स्पर्श | ↓ अन्तःस्थ | ↓ ऊष्म

(क) **स्पर्श व्यंजन :-** जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। यहाँ वायु कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत व ओंठ का स्पर्श कर बाहर आती है। स्पर्श व्यंजन 25 हैं।

वर्ग	व्यंजन	उच्चारण स्थान	नाम
क वर्ग	क ख ग घ (ङ)	कंठ	कंठ्य
च वर्ग	च, छ ज झ (ञ)	तालु	तालव्य
ट वर्ग	ट ठ ड ढ (ण)	मूर्धा	मूर्धन्य
त वर्ग	त थ द ध (न)	दाँत	दंत्य
प वर्ग	प फ ब भ (म)	ओठ	ओष्ठ्य

प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण अनुस्वार (ं) के रूप में भी प्रयुक्त होता है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

Kumar
Date: / /
Page:

(ख) **अंतःस्थ :-** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती वे अतःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है:- य, र, ल, व

इनके उच्चारण करते वक्त वायु केवल नाक से निकलती है। इसे (ं) चिह्न द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे:

गङ्गा - गंगा

मञ्च - मंच

ठण्डा - ठंडा

गन्दगी - गंदगी

कुटुम्ब - कुटुंब

(ग) **ऊष्म :-** जिन व्यंजनों के उच्चारण करने पर मुँह से रगड़ खाने के बाद ~~हवा~~ वायु उष्ण (गरम) हो जाती है, वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। ये भी चार हैं- श्, ष्, स्, ह्

3. **अनुनासिक :-** (ँ) जब किसी वर्ण का उच्चारण करने ~~पर मुँह~~ समय वायु मुँह और नाक से एक साथ निकलती है तब अनुनासिक का प्रयोग किया जाता है। इसका चिह्न (ँ) है। जैसे → आँख, चाँद, मुँह आदि।

4. विसर्ग (:) :-
इसका उच्चारण करते वक्त 'ह' की ध्वनि निकलती है। तत्सम शब्दों (संस्कृत से आए हुए) में ही इनका प्रयोग किया जाता है। इसका चिह्न (:) है। जैसे: अतः, प्रातः, वस्तुतः आदि।

5. आगत ध्वनियाँ :-
विदेशी भाषाओं के शब्द जब हिन्दी में प्रयुक्त किए जाते हैं तो उनके लिए कुछ ध्वनियाँ विकसित की गई हैं, जैसे: ऑ ज़ फ़।

- अंग्रेजी के शब्दों के लिए ऑ ध्वनि है जिसके लिए (ॅ) चिह्न निश्चित किया गया है। जैसे: बॉल, डॉक्टर, डॉक्टर।
- उर्दू अरबी फ़ारसी शब्दों के लिए ज और फ वर्णों के नीचे बिंदु लगाए जाते हैं, जिसे क़ नुक्ता कहते हैं। जैसे: क़ागज़, फ़न, सज़ा।

6. संयुक्त व्यंजन :-
दो भिन्न व्यंजनों के परस्पर संयोग को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में प्रमुख चार संयुक्त व्यंजन हैं - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

क्ष = क् + ष् + अ (क्षत्रिय, क्षमा)

त्र = त् + र् + अ (त्रिशूल, त्रिभुवन)

ज्ञ = ज् ञ् अ (ज्ञानी, यज्ञ)

श्र = श् र् अ (श्रमिक, श्रम)

7. दित्व व्यंजन :-
जब एक ही व्यंजन दो बार स्वर रहित तथा स्वर सहित प्रयुक्त होते हैं, तो दित्व व्यंजन कहलाते हैं।

जैसे: ल्ल ⇒ बिल्ली
म्म ⇒ चम्मच

8. प्राणतत्व की माला के आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं :-

1. अल्पप्राण :-
जिन व्यंजनों में ध्वनियों (वर्णों) के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

वर्गों के पहले पहले, तीसरे एवं पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व इसके अंतर्गत आते हैं।

जैसे: क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व

2. महाप्राण :-
जिन व्यंजनों वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

वर्गों के दूसरे तथा चौथे वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन इसके अंतर्गत आते हैं।

जैसे: ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ढ़, श, ष, स, ह

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

1. वर्ण विच्छेद :-

शब्द में प्रयुक्त वर्णों से स्वर और व्यंजन को अलग-अलग करना वर्ण विच्छेद कहलाता है।

जैसे :-

कैद ⇒ क् + ऐ + द् + अ

कर्म ⇒ क् + अ + र् + म् + अ

Good 16/07/19

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera